IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गाँव की उत्पत्ति: सिद्धांतों और बहुआयामी कारकों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

वन्दना सिंह

शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग

राजा श्रीकृष्ण दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय जौनपुर

डॉ. अभय प्रताप सिंह

शोध निर्देशक, एसो. प्रो. समाजशास्त्र विभाग

राजा श्रीकृष्ण दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय जौनपुर

सारांश (Abstract)

गाँव की उत्पत्ति मानव सभ्यता के विकास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जो सामाजिक संगठन, आर्थिक संरचना और भौगोलिक अनुकूलन की प्रक्रिया से जुड़ी हुई है। प्रस्तुत अध्ययन में गाँव-उत्पत्ति के प्रमुख सिद्धांतों कृषि सिद्धांत, उद्विकासीय सिद्धांत, ऐतिहासिक सिद्धांत तथा चरागाह सिद्धांत का विश्लेषण किया गया है, जो विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तावित हैं। इन सिद्धांतों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि गाँव केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक सामाजिक संरचना है जो मानव की सामूहिक जीवन शैली, सुरक्षा की भावना, और उत्पादन के साधनों की उपलब्धता से प्रेरित है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन में गाँव की उत्पत्ति के बहुआयामी कारकों प्रादेशिक, आर्थिक और सामाजिक की भूमिका को रेखांकित किया गया है। ये कारक न केवल मानव के स्थायी निवास की प्रवृत्ति को प्रभावित करते हैं, बल्कि ग्रामीण जीवन की स्थिरता, आत्मनिर्भरता और सामाजिक समरसता को भी आकार देते हैं। इस समाजशास्त्रीय विश्लेषण के माध्यम से गाँव की उत्पत्ति को एक समग्र दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है, जो ग्रामीण समाज के स्वरूप, विकास और चुनौतियों की गहरी समझ प्रदान करता है।

मुख्यशब्द: गाँव की उत्पत्ति , कृषि सिद्धांत, उद्विकासीय सिद्धांत, ऐतिहासिक सिद्धांत, चरागाह सिद्धांत, ग्रामीण संरचना

प्रस्तावना

गाँव की उत्पत्ति मानव सभ्यता के विकास की एक मौलिक प्रक्रिया है, जिसमें कृषि, पशुपालन, सामाजिक संगठन और भौगोलिक अनुकूलन की भूमिका रही है। यह अध्ययन गाँव-उत्पत्ति के विविध सिद्धांतों कृषि, उद्विकासीय, ऐतिहासिक एवं चरागाह सिद्धांत का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जो ग्रामीण संरचना की बहुआयामी समझ को स्पष्ट करता है। इस शोध में गुणात्मक विधि अपनाई गई है, जिसमें द्वितीयक स्रोतों जैसे समाजशास्त्रीय ग्रंथों, ऐतिहासिक दस्तावेजों, ग्रामीण विकास पर आधारित रिपोर्टों तथा विद्वानों के मतों का विश्लेषण किया गया है। सामग्री के रूप में हिंदी और अंग्रेज़ी में प्रकाशित शोध लेख, पुस्तकें, और शैक्षणिक पत्रिकाएँ सम्मिलित की गई हैं। अध्ययन का उद्देश्य गाँव की उत्पत्ति के बहु-कारक दृष्टिकोण को उजागर करना है, जिससे ग्रामीण समाज की संरचना, स्थायित्व और विकास की प्रक्रिया को बेहतर समझा जा सके।

गाँव की उत्पत्ति के सिद्धांत: गाँव-उत्पत्ति के सिद्धांतों के प्रति विद्वान एक मत नहीं हैं। सामान्यतः निम्न सिद्धांत इस दिशा में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैंः

(1) **कृषि सिद्धांत** – इस सिद्धांत के समर्थकों का कहना है कि कृषि ने ही गाँव की उत्पत्ति की है। यदि आदि मानव को कृषिज्ञान नहीं होता तो गाँव संरचना का कदापि उदय ही नहीं होता। इन लोगों का यह भी मत है कि समस्त गाँवों की संरचना का आधार कृषि ही है।[1,2]

(2) **उद्विकासीय सिद्धांत** – इस धारणा के मतावलंबियों का विश्वास है कि मानवीय विकास की प्रक्रिया ने ही गाँव को जन्म दिया। सभ्यता के विकास के कारण गाँव की उत्पत्ति हुई। इस विकास के सिद्धांत के अंतर्गत ये विद्वान मानते हैं कि चरागाह, कृषि आदि के द्वारा सभ्यता के विकास के साथ गाँवों की उत्पत्ति हुई।[3]

(3) **ऐतिहासिक सिद्धांत** – इस विचार के समर्थक विद्वानों का विचार है कि गाँव की उत्पत्ति नव-पाषाण काल में हुई थी। पाषाणकालीन सभ्यता के समय ही गुफाओं आदि के निवास के द्वारा ये लोग इस तथ्य की पुष्टि करते हैं।[4]

(4) **चरागाह सिद्धांत** – चरागाह सिद्धांत के समर्थकों का विचार है कि गाँव की उत्पत्ति चरागाह अवस्था में, पशुपालन की मनोवृत्ति के कारण हुई। पशुपालन में चरागाह अत्यंत आवश्यक थे। इसलिये जब तक पशुओं के लिये चारा उपलब्ध होता रहा, तब तक अस्थायी रूप से व्यक्तियों को इन स्थानों पर निवास करना पड़ा। इस निवास की व्यवस्था के फलस्वरूप ही गाँव की उत्पत्ति हुई।[5]

गाँव की उत्पत्ति के कारक: भूगोलशास्त्रियों एवं समाजशास्त्रियों ने गाँव की उत्पत्ति के विभिन्न कारकों का उल्लेख किया है। गाँव की उत्पत्ति की पृष्ठभूमि में इन कारकों का महत्वपूर्ण स्थान है। ये कारक निम्न हैंः

(1) **प्रादेशिक कारक** – गाँव की उत्पत्ति का आधार मानवीय आवश्यकताओं एवं ज्ञान की वृद्धि है। कृषि के ज्ञान ने तथा पशुपालन की प्रवृत्ति ने आदि मानव को प्राकृतिक अवस्थाएँ, जलवायु, ऊपज, भूमि की दशा, पानी के साधन, चरागाह आदि तथ्यों पर सोचने को बाध्य किया। जिस स्थान पर इन बातों की सुविधा प्राप्त हुई अथवा जब तक हुई, मानव अस्थायी, अर्धस्थायी एवं स्थायी रूप में बसने लगा।[6]

(2) **आर्थिक कारक** – गाँव की उत्पत्ति का दूसरा कारक आर्थिक व्यवस्था का विकास है। जिस स्थान पर अधिक उपज व कृषि के साधन उपलब्ध हुए, मानव उस स्थान की ओर आकर्षित हुआ। इसके अतिरिक्त सभ्यता के विकास ने उसको यह भी सोचने को बाध्य किया कि जीवन की अन्य आवश्यकताएँ पूर्ण करने के लिये यातायात की सुगमता, आर्थिक संस्थाओं का निर्माण, आदान-प्रदान, कुटीर उद्योग आदि की सुविधाओं को प्राप्त करने के लिये गाँव की संरचना आवश्यक है।

(3) **सामाजिक कारक** – गाँव की उत्पत्ति की पृष्ठभूमि में सामाजिक कारक भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। सुरक्षा, शांति और स्थिरता के तत्व इस दिशा में उल्लेखनीय हैं। समाज के स्थायी स्वरूप से सुरक्षा एवं शांति प्राप्त होती है। इन भावनाओं ने ही ग्रामीण समुदाय को गाँव संरचना के लिये बाध्य किया, जिसमें भूमि विभाजन, भूमि संबंध आदि समस्याएँ हल की जा सकती थीं।[7]

अतः यह स्पष्ट है कि कृषि, पशुपालन, सुरक्षा, सामूहिक जीवन तथा भोजन समस्या ही गाँव की उत्पत्ति के प्रमुख कारक हैं। उक्त प्रमुख कारकों के अतिरिक्त भी ऐसे अनेक कारक हैं जिनके फलस्वरूप गाँव की उत्पत्ति हुई है।

निष्कर्ष (Conclusion)

गाँव की उत्पत्ति एक बहुस्तरीय और बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें मानव सभ्यता के विकास, कृषि ज्ञान, पशुपालन प्रवृत्ति, सामाजिक सुरक्षा और भौगोलिक अनुकूलन की केंद्रीय भूमिका रही है। विभिन्न सिद्धांतों—कृषि, उद्विकासीय, ऐतिहासिक और चरागाह—के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि गाँव केवल निवास का स्थान नहीं, बल्कि सामाजिक संगठन, सांस्कृतिक विकास और आर्थिक आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। इसके अतिरिक्त प्रादेशिक, आर्थिक और सामाजिक कारकों ने गाँवों की संरचना को स्थायित्व और विविधता प्रदान की है। यह अध्ययन ग्रामीण समाज की उत्पत्ति को एक समग्र दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करता है, जो समाजशास्त्रीय विमर्श में इसकी प्रासंगिकता को और अधिक सुदृढ़ करता है।

संदर्भ (References)

1. दुबे, एस.सी. (1997). भारतीय ग्राम और उसका समाजशास्त्र. नई दिल्ली: राष्ट्रीय प्रकाशन.
2. रेडफील्ड, रॉबर्ट (1956). The Little Community. University of Chicago Press.
3. सिंह, योगेन्द्र (2000). आधुनिकता और समाज परिवर्तन. नई दिल्ली: रावत प्रकाशन.
4. चंद्र, सतीश (2012). भारतीय ग्रामीण संरचना का विकास. वाराणसी: ज्ञान भारती.
5. Desai, A.R. (1969). Rural Sociology in India. Bombay: Popular Prakashan.
6. Sharma, K.L. (2013). Indian Social Structure and Change. Jaipur: Rawat Publications.
7. Government of India (2020). Rural Development Report. Ministry of Rural Development.